



नमो भगवते वासुदेवाय
१. मेव गतं यत्कृतं

वृक्षली सुयाम्बुदेव गीतवः॥ अजह
 रं भनै बुद्धिं गदितं एवमागिली॥ धा
 लपनि उषा वृत्तं भमनि मुनमेव
 म॥ वरुण दधुमम गद डुल कल्प
 भुमेठ ॥ गमं डुपं उषा गतं सुव
 भ्यसेष येगिनी॥ भवुं गण भुमसुव
 गदेत्रागयली उषा॥ सुयुग्म गद
 वगदि एमं गद उवै धुवी॥ यमः
 कीर्तिं म लङ्गी म भम गद उ मरि
 ली॥ उमूली गद उमूरे पञ्च गद उ
 मरिक्का॥ पञ्च गद उ म मवी ठां
 गद उ ठ गवी॥ पञ्च नं विपष गद म
 नं दे भङ्ग गी उषा॥ गण सु र भजल
 डी विणय भचतः भित्त॥ गद डी
 नं उ नं वलितं कवम न उ॥ उडुचं
 गद उ मवी गयती पाप न सिनी॥ र

म
भ
०

यडु

हु

नी॥ हृदये ललित उमयी ॥ मंगल मुखा
वाभिनी॥ नगकिं तु कर्मिनी गद सुंद
गुह्य सुगी उषा॥ अउ नवा म भक्त
गुह्य भक्ति वदिनी॥ कटु रग वगी
गद सुकुम भय वदिनी॥ एह
भक्त वल गद सुकुम विनायकी
गुह्य येन गमिनी म पश्य सुउडे
राभी॥ भक्त सुली सी गद सुकुम
भक्त वभिनी॥ नपा मं भुक्ता
ली म के मं सुवे सु के सिनी॥ गेम सुप
भक्त भारी सुम वागी सुगी उषा॥ गउ
भक्त वभा भक्त सुमि भक्त भि पावरी
॥ सुकुम काल गति सु पिउं म भक्त
ह सुगी॥ पश्य वती भक्त के म कटु
भक्त भुक्ता॥ सुला भापी नभा ए
ल भक्त भक्त भक्ति॥ सुकुम गद उ

किं
सुंद
गी सुम
हं सुकुम
कटु
क सुगी
सुकुम
गी सुम
भक्त

सभृसी द्वितीय गति उभू ॥ श्री विष्णुः
 पथिः ॥ श्री भद्र लक्ष्मी वता ॥ उ
 द्वि कृतः ॥ साक भूरी सक्तिः ॥ वा ^{उत्तम}
 युभुवभा ॥ श्री भद्र लक्ष्मी श्री उज्ज ^{त्रिकुटी}
 द्वितीय गति उपाठ विनियोगः ॥ स
 द ^{उत्तम} ^{त्रिकुटी} ^{लभा}
 उ ^{उत्तम} ^{त्रिकुटी} ^{लभा}
 एला ए ^{उत्तम} ^{त्रिकुटी} ^{लभा}
 लं पाम भद्र जनेन ^{उत्तम} ^{त्रिकुटी} ^{लभा}
 भूवाल प्रकं मेव मै गिति भद्रिनी
 भिद्र भद्र लक्ष्मी भूरी भुति उभा
 ॥ जि पथि न याम ॥ एव भद्र भद्र
 मुकुं प्रलभ भद्र सतं पुरा ॥ भाजि
 भद्र भद्र भद्र भद्र नं स पुरा
 उ ॥ ॥ उ उ भद्र भद्र वी देव भद्र
 उं पुरा गति उभा ॥ एव भद्र भद्र

य एवेष्ट प्रति
 भयी

२
 भ
 ९९

धुं भमवष्टा वृत्त वधि ॥ किमर्तुन
 यरे ७३ ॥ यता वद्वि कृतं भया ॥ १
 २ ॥ एधि मवासा ॥ वद्वि ता हामि
 तितुम भच भुमे भयं रा गता ॥
 विले कृतं गमिउं ठगवा कभले
 दलः ॥ १५ ॥ सुवा एधि युदेची
 भलिलेन परिपुता ॥ १६ ॥ एधि
 मवासा ॥ उषे डूक ठगवता साद
 मरु गम हता ॥ ठग मरु लये
 मित्रे एध न मिगमी उयेः ॥ ११
 ॥ एव भेषा भम डूक वृत्त ७३
 भुता यमा ॥ प्रठवम सुम हृष्टं
 क्रयः मरु वरामिउं ॥ १३ ॥ उति
 मीभा कृष्टे य प्रगाल भावलि के
 भनतुर मीम्वी भनतु भपुके
 एठ वपे नाम प्रथमेष्टायः ॥ १० ॥

उषे डूक ठग
 वता मरु मरु
 मरु हता

३

भुं गाये वरु वरी एपि कृष्टे भन कलै भन कृति
 भमय यमिभ्रद ॥ ०५ ॥

नमस्मिन्निजिनः॥ यावयाव द वं
 यावयाव न भुम्भु ॥ मयानः भुम्भु
 कवः ॥ उपमाये धिसुमः ॥ दहं
 वृज भुम्भु ॥ उपदल वयाउय ॥ उ
 पउगाउयाकं दल भुम्भु उदिवः
 गतिभुम्भु वरिगृयी ॥ सुगतिपति
 वंगणः पितुगृयी भक्तिः ॥ मिय
 भुम्भु मि दलती विडिभुम्भु सुद्वयं व
 तुउ उमः ॥ यउगति रुमदुमै युज
 भिन वडिभुम्भु समीति भुम्भु उउउ
 भुम्भु भुम्भु ॥ गंती प्रपदुमै ननी भ
 चरुउ निवेसनी भा ॥ रुमं रुगवती
 दहं विमुमु एगति निमं भा ॥ मं व
 सिनी भंयभनी गृज नदुमै भगतिनी
 भा ॥ प्रपदुमै सिवां गंती रुमं भा
 भसं भक्ति ॥ गंती ॥ कालगंती ॥ उल

॥
 म.
 ७७

य. ॥ ७७

५३५ +

मिश्र

मनुयः॥ रज्जु मन्त्रिक मुजा ह्म भदिरी रनि
 ॥ अग्नि वायु भद्रा भद्रा नि॥ भभाठी धूरा
 यथा विनियोगः॥ वृद्ध विष्णु भद्रा मुग
 एधि हे नमः मिरभि॥ गायत्री धृति ग न धृ
 धृति हे नमः भापे॥ भद्रा कली भद्रा ल
 द्वा भद्रा भद्रा भद्रा हे नमः उ हे नमः ह्मि॥

नमः साक भृगी ठी मा मन्त्रि हे नमः मद्र
 भुन॥ रज्जु मन्त्रिक मुजा ह्म भदिरी रणे
 हे नमः वम भुन॥ अग्नि वायु भद्रा भद्रा
 हे नमः नठे॥ ह्रीं लीं मा भुं यै वि
 सुं उति भुल न करे भं मद्रा॥ भुं धृ
 हं नमः॥ ह्रीं उल नी हं नमः॥ लीं भद्र
 भा हं नमः॥ मा भुं यै न भिक हं
 नमः॥ विष्णु कनिष्ठा क हं नमः॥ भुल
 क रतल क रतल धृ हं नमः॥ ह्म य॥
 ह्रीं मिरभि॥ लीं मि पयै॥ मा भुं यै

म
 भ
 ०३

च

च

गङ्गा गङ्गा गङ्गा ॥ मित्र गङ्गा ॥ गङ्गा गङ्गा श्री
 यज्ञं श्रीत भुजु ॥ ॥ मधनवल
 प्रणविण नमः ॥ सुमधु ॥ मधक गे
 उभू, भक मधुलः मठीपुकाभनमि
 मूजं नवल राध भुदं करिषु ॥ मधु
 मीनवल भुजु, वृद्ध विष्णु भज सुग
 लयः ॥ गायत्रि धिग, उधुधुमं मि ॥
 भद्रकाली भद्रलक्ष्मी भद्रभगवद्दे
 देवताः ॥ नमः साक भुगीठीमः मज्ज
 यः ॥ गङ्गा गङ्गा मज्ज भद्र देवी
 नि ॥ मधिवायु भद्र भुजु नि ॥ मभ,
 मधुजं + मीपुण्य भद्र विनियोगः ॥ वृद्ध वि
 भुमदे सुग लयिष्ठे नमः मित्रमि ॥ गाय
 त्रि धिग, उधुधुमं नमः भाषे ॥ भद्र
 काली भद्रलक्ष्मी भद्रभगवद्दे
 उष्टे नमः भद्रमि ॥ नमः साक भुगीठीमः

ॐ भवगङ्गा लि सत्तैस्तथापङ्गी
 लि ॥ परमेकं नगच्छेत्तु यमीच्छेत्तु
 ठभाङ्गनः ॥ कवमेनः कउं निहंयत्
 यैः डिगसुति ॥ उउउउललसु
 विरायः भविकभिकः ॥ यंयंमि
 उयउकमं उं उं प्रप्रेति निस्तिउभा
 परमेष्टदभउलं प्रप्रेति विभुलं प्र
 भाना ॥ निरुये एयउं भउं भउं भ
 पुपुगगितः ॥ इलेहेमठवउं पुः
 कवमेनः कउः प्रभाना ॥ उं उं उं उं
 कवमेनः कउः प्रभाना ॥ यः
 पठउउउउय डिभं सुसूर्यवि
 उः ॥ रणीवद्वसु मउं भागु भपुभउ
 विवज्जितः ॥ नसृतिवृणयभुभु
 उविभेऽकमयः ॥ भुवंगराङ्गभं
 मयः उभिं मगपियद्विधमा ॥ सुठिमा

ॐ श्रीकलठविउहेनेनेपापरागिभर

गलिभचलिभुवयडुलिहुउले॥
 रुमराःपिसरासुवकुलएसुधमे
 मराः॥भऊएःकुलएभालहुकि
 नीमकिनीमया॥सुतुगिदमराधि
 ० गमकिनुसुभऊरलाः॥गुलहु
 उधिसामासुयदगवचगदम॥
 वुदगदभवउलाः॥ऊधुहुठ
 गवमयः॥मसनउधुनसुतिद
 यमेदुगिमंभितु॥भनेत्रितुवेदु
 भाउलेदुकिनीपगमा॥यमभा
 वचउभेधकीडिभभितुहुउले॥
 एधेदुधुमतीमंहीठउउकवमं
 पग॥उधुएधेदुगठहुकवमं
 भवकभमं॥निचिधुगठवेदुकि
 सुहीएधमभुवः॥यावहुमेए
 गंउठुभमेलवनकनरभा॥उवडि

॥३५॥

१५॥ मचमं उषा सुकुं कीयुगम्
 चराम्पु॥ त्रयं विमली उषु
 वीयकभनउम॥ १५॥ सुकुली
 यक रङ्गनिभममुभुलीधु
 म॥ विसुकम् मये उषु परसु
 मति निमलमा॥ १६॥ मभुष्ट
 नेक कुपालि उषु ठुंग मंभम
 ॥ मभुष्ट पङ्क एंभालं मिगसु
 मिग पङ्क ॥ मभुष्ट लणि
 भुष्ट पङ्क एं मति निमलमा १७॥
 जिभवा चणनं भिदं रङ्गनिविवि
 एनिम ॥ मभुष्ट वसु उंभगया पान
 पाउं एन पियः ॥ १८॥ मभुष्ट भव
 नगैमै भज भलि विक्रिधितमा॥
 नगजं मये उषु एडुयः पवि
 वीभिमाभा ॥ १९॥ मभुष्ट भिभुगु

वीरुवल्लगपुणमुषा॥ भभानिता
 ननमिस्त्रैभ्रातुदामं भद्रमुद्रः॥ ३०
 ॥ उभ्रानमेन प्यरल्लरुद्रुमाप्रि
 उंनरुः॥ सभायतातिभद्रताप्रुति
 सव्रैभद्रनद्रुता॥ ३१॥ मद्रुद्रुद्रु
 कलालेक भभसुसुमकमिरे
 ॥ गगलवभुणमेलभकलसु
 भजीणरः॥ ३२॥ एयेतिगभ्रु
 म्वाभुभ्रुमुधिंजवाजनभ॥ उ
 भ्रुव्रुनयसुनं रुजिनभ्रुद्रुभ्रुयः
 ॥ ३३॥ मद्रुभभभुंमंरुद्रुंरुलेरु
 भभगरयः॥ भत्रमुपिलभ्रु
 सुभभ्रुभ्रुद्रुयणः॥ ३४॥ सुः
 किभ्रुमिद्रुिरेणमद्रुभ्रुभ्रु
 भ्रुः॥ मद्रुणवउउंमद्रुभ्रुभ्रु
 भ्रुचउः॥ ३५॥ भभ्रुभ्रु उउमेवी

म
 भ-
 १५

द्यापुलेक इयं त्रिधा ॥ परं नृत्तं नृत्त
 उक्तं किं गीतं लिपितं भुग्मा ॥ ७
 ॥ हेतिता मेधभातालं परत्तु नि
 भुने नताभा ॥ मिसेकृण भद्रमुल
 भमतापुपुभं किताभा ॥ ७३ ॥ उतः
 पूर्ववदेयं उयमेव भगमिधा
 भा ॥ सभुभुवुद किमुक्तं गमीपि
 उदिगताभा ॥ ७४ ॥ भजिधा भु
 मेनानी सिद्धगपि भद्राभुगः ॥ यु
 यपेसाभगसुवै सुउरग रलात्रि
 उः ॥ ७५ ॥ गघानाभयुतेः धदिम
 मगुगपि भद्राभुगः ॥ सयपुतायु
 उतांगम भद्रमुल भद्राभुगः ॥ ७६ ॥
 पाद्म धदिम नियुते गभिलेभाम
 जभुगः ॥ सयुतां नंसतेः धदिवा
 धुलेयुयपेरले ॥ ७७ ॥ गरावगणि

भद्रभेयै गुरुकै परिवागितः ॥ वउ
 गवानं के ह म यमु उभिन्न यष्ट
 ॥ २३ ॥ चित्तु ल गियुत नं म पान्
 पदि गवा यउः ॥ ययपुं सं यगउउ
 गवानं परिवागितः ॥ २४ ॥ मउ
 पिउउ यउमे गवन गजय चउः
 ययपुः सं यग गह भद्र उउ भद्र भु
 गः ॥ २५ ॥ केटि केटि भद्र च सु
 गवानं गति नं उवा गजय नं म
 वउ यमु उउ उउ जिवा भुगः ॥ २६ ॥
 ॥ उम गैठि कि पाल सु मज्जिठि
 मुसलै भुवा ॥ ययपुं सं यग गहः
 ॥ २७ ॥ पडुः भगु पडु मः ॥ २८ ॥ केमि
 सुमिदि पः मज्जीः ॥ केमि उमं भु
 वा भग ॥ गवी पडु भुग गै मु उउं
 जउ भुग रुमः ॥ २९ ॥ भगि प गवी उ

२
 म
 ३०

उभुनिमसुः ॥ भुलिमदि क ॥
 लीलयेव भुमि सुके निमसुः भु
 वदिनी ॥ २७ ॥ मनाय भु नने
 वीभुयभान भुगदिदिः ॥ भभेग
 भुगदेव भुमसुः ॥ भुलिमसुमी
 ॥ ४० ॥ भेधिरु सुकुत भये मेव
 वादन के भरी ॥ मगग भुभैव
 धवने धिव रुतामनः ॥ ४० ॥ निः
 साभानु भुगये सं य सु भुभार
 लभिक ॥ उपवभसुः भभुता ग
 सुत भदभसः ॥ ४१ ॥ युयुपुसुध
 र सुठिठिठि भालाभि पदिमैः
 ॥ नमयते भुगग ॥ देवीमसु
 वंदिताः ॥ ४२ ॥ मवगयते ध
 नने ॥ माहं भुषा भरे ॥ भम
 सुतवै ॥ वावै उभिदुसुभजे

ॐ ॥ ५२ ॥ उ॒त॒म॒वी॒रि॒क॒लेन॒
 ग॒म॒या॒म॒र॒व॒धृ॒तिः॥ ॥ ५३ ॥ मि
 ति॒सु॒स॒त॒मे॒नि॒ए॒ध॒न॒भ॒ज॒भ॒ग
 न॥ ५४ ॥ भ॒ग॒व॒त॒य॒भ॒ग॒म॒मे॒व॒तु
 उ॒र॒भु॒न॒वि॒म॒दि॒त॒न॥ ॥ ५५ ॥ भ॒ग॒व॒त॒
 कु॒वि॒ध॒म॒ने॒न॒र॒दु॒गा॒व॒त्र॒क॒प॒य॒त्र
 ॥ ५६ ॥ के॒मि॒दि॒सु॒ण॒ठ॒त॒भी॒हृः॥
 ॥ ५७ ॥ भ॒ग॒व॒त॒य॒भ॒ग॒म॒मे॒व॒तु
 वि॒ध॒म॒ने॒न॒ग॒म॒या॒कु॒वि॒म॒दि॒त॒न॥ ॥
 ॥ ५८ ॥ के॒मि॒दि॒सु॒म॒णि॒रं॒भ॒म॒ले॒न॒हृ
 सं॒द॒तः॥ ॥ ५९ ॥ के॒मि॒दि॒सु॒म॒णि॒रं॒भ॒म॒ले॒न॒हृ
 त्रः॥ ॥ ६० ॥ के॒मि॒दि॒सु॒म॒णि॒रं॒भ॒म॒ले॒न॒हृ
 गः॥ ॥ ६१ ॥ के॒मि॒दि॒सु॒म॒णि॒रं॒भ॒म॒ले॒न॒हृ
 रि॒रं॒मे॒न॒न॒क॒रि॒मः॥ ॥ ६२ ॥ के॒मि॒दि॒सु॒म॒णि॒रं॒भ॒म॒ले॒न॒हृ
 सु॒धि॒म॒सा॒ग्यः॥ ॥ ६३ ॥ के॒मि॒दि॒सु॒म॒णि॒रं॒भ॒म॒ले॒न॒हृ
 ज॒वः॥ ॥ ६४ ॥ के॒मि॒दि॒सु॒म॒णि॒रं॒भ॒म॒ले॒न॒हृ

ॐ
 ५२
 ५३

३

॥सिगंमिपउरुय भुमभुविग
 रिताः॥२०॥विम्विजएभुपर
 पउरुचुंभनभुगः॥एकचक्र
 हिमरः॥कमिद्विहृणसु
 उ॥२०॥सुत्रपिणतुमिगभि
 पतिताःपुनमतिताः॥करवृष
 यपुद्विहृणदीउपगमायुणः॥
 २१॥नरुउसुपरेउउयुद
 लयाविताः॥करवृषसुत्रमिग
 भाःपदुसुत्रपिणलयः॥२३
 ॥उपुतिपुतिठपउरुवीमभुम
 नभुगः॥पतिउरुघनगामु
 भुगसुवभुग॥नगभाभठव
 उउयुद्विहृणमभनगलः॥२४॥
 मैलिउरुभाभनगसुभुमभु
 विभुसुवः॥सुत्रगभुमभुमभु

३

०५

三

五

13

○

卷之六

五

13